अंताक्षरी

कहानीमाला– 37

शैतान चुहिया



– विजयदान देथा

शैतान चुहिया

—विजयदान देथा

एक थी चिड़िया और एक थी चुहिया। परस्पर धरम-बहिनें हुई। एक दिन चुहिया ने चिड़िया से कहा—चलो, अपन पहाड़ के झरने में नहाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मैं मना क्यों करूं? दोनों बहिनें नहाने चली। चिड़िया तो फड़ाफड़ स्नान करके बाहर निकल आई, पर चुहिया गुचलकिये खाने लगी। डूबती डूबती बोली—चिड़कल बहिन बाहर निकाल ए! तब चिड़िया ने फुर्र से उड़कर डूबती चुहिया की पूछं को चोंच में पकड़ बाहर निकाल लिया।

चुहिया थी बेहद चंचल। जिन्दा बाहर निकलते ही मरने की बात भूल गई। बोली—चलो अपन, बेर खाने चलें। चिड़िया ने कहा—चलो, तुम्हारी इच्छा है तो मना क्यों करूं? दोनों बहिनें एक बोरड़ी के मीठे बेर खाने लगी। चिड़िया ने तो झपाझप बेर खा लिए। पर चंचल चुहिया कांटों में फंस गई। बोली—चिड़कर बहिन, जरा कांटों से बाहर निकाल ए!

चिड़िया ने तो उसी क्षण अपनी बहिन का संकट देख उसे कांटों से बाहर निकाल लिया। पर चुहिया तो बाहर निकलते ही पिछला संकट भूल गई। रास्ते में एक भेंसे पर उसकी नजर पड़ी तो बोली—चलो अपन इस भेंस का दूध पीयें? चिड़िया तो कहते ही फुर्र से उड़ी सो भेंस के उवाड़े पर जाकर बैठ गई। छक कर दूध पीया। लेकिन

चुहिया अपने तीखें दांतो से भेंस के स्तन कुरतने लगी तो भेंस ने पूंछ की फटकार से चुहिया को नीचे गिरा दिया। ऊपर से पोटा किया सो वह चंचल चुहिया उसके नीचे दब गई। दबे स्वर में बोली : चिड़कर बहिन, जरा बाहर निकाल ए!

सुनते ही चिड़िया ने अपनी चोंच व अपने पंजो से पोटा बिखेरना चालू किया सो देखते देखते दबी चुहिया को बाहर निकाल लिया। परन्तु चुहिया की चंचलता का कोई अंत थोड़े ही था। एक ऊंट सामने आया तो बोली—चलो, अपन ऊंट की सवारी करें। चिड़िया तो सुनते ही फुर्र से उड़ी, सो ऊंट के सिर पर बैठ गई, फिर उसकी पीठ पर बैठकर मजे से सवारी गांठली। किन्तु चुहिया के चढ़ने से ऊंट के पैर पर खाज चलती तो वह जोर से टांग पटकता और चुहिया

नीचे गिरती। यों करते करते एक बार चुहिया पांव के नीचे दब गई। ऊंट के वजन से उसका श्वास ही थम गया। चीं चीं करती बोली—चिड़कर बहिन मेरे प्राण बचा ए, मैं तो मरी।

चिड़िया ने बहिन को उबारने के लिए तुरंत उपाय सोच लिया। कान से सट कर पंख फड़फड़ाने लगी तो ऊंट झड़क कर दौड़ा। चुहिया का कचूमर निकलते निकलते बच गया। फिर चिड़िया उसे समझाते हुए कहने लगी—बहिन, ज्यादा चंचलता अच्छी नहीं, कभी बेमौत मारी जायेगी। पर चुहिया ने उसकी सीख पर कान ही नहीं दिया।

आगे जाते जाते चुहिया को एक रोटी मिली। चिड़िया ने कहा—चुहिया बहिन, थोड़ा टुकड़ा तो मुझे भी दे। पर चुहिया ने तो

बिलकुल ही मना कर दिया। बोली—मुझे मिली है रोटी, तुझे क्यों दूं। तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे झरने से डूबती हुई को बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे बचाया री क्यों बचाया, मैं तो हर हर गंगा नहा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे बेर के कांटों से बचाया था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली मुझे री क्यों बचाया री क्यों बचाया, मैं तो कच कच कान छिदवा रही थी। तब चिड़िया ने कहा—क्यों री, मैंने तुझे भेंस के पोटे से दबती हुई को निकाला था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री क्यों बचाया, मैं तो अपनी कमर खुंदवा रही थी।

तब चिड़िया ने कहा—मैंने तुझे ऊंट के पैर से मरती को बचाया

था न, इतनी जल्दी भूल गई। चुहिया बोली—मुझे क्यों बचाया री क्यों बचाया, मैं तो कट-कट चनक निकलवा रही थी। चिड़िया ने सब तरह से समझाना चाहा, किन्तु शैतान चुहिया नहीं मानी। कुट कुट करती अकेली ही सारी रोटी खा गई। चिड़िया को एक भी नहीं दिया।

जाते जाते वे दोनों एक बामन के खेत पर पहुंचीं। बामन अपने खेत में ज्वार काट रहा था। उसने एक बड़ा भारा बांधकर उठाया। घर की ओर जाने लगा तो चुहिया बोली—चलो अपन इसके घर चलें। तब चिड़िया ने कहा—मैं अब तेरे साथ कहीं नहीं चलने की। यहीं खेत में ठहरूंगी। ज्वार का चुग्गा चुगूंगी। बच्चों को संभालूंगी। तेरी शैतानी तू भुगत। पर चुहिया तो बेहद चंचल थी। कुछ न कुछ शैतानी

किये बिना उसे सुहाता ही नहीं था। बोली—जैसी तेरी मरजी, मैं तो इसके घर जाऊंगी। पर बात याद रखना, तेरी सोहर के वक्त मुझे इस बामन के मारफत खबर भिजवाना, तब तक मैं इसी के घर रहूंगी। खबर मिलते ही दौड़ी चली आऊंगी।

चिड़िया ने कहा- अच्छा, मैं तुझे खबर भिजवा दूंगी। यह कहकर चिड़िया तो अपने घोंसले की तरफ उड़ गई। और उधर वह शैतान चुहिया, बामन का पीछा करती हुई, आखिर उसके घर पहुंच ही गई। कुछ ही देर में सारे घर को छान मारा। बिल बनाने के लिए कोई ठीक जगह नहीं मिली। अंत में चाकी के नीचे बिल खोदकर उसमें डेरा जमाया।

एक दिन वह बामन अपने खेत में भारा बांध रहा था कि चिड़िया

बोली :

बांमणिया कण मांगणिया, पग पूळी बांधणिया,
मूसादे नं जा'यर कैजै, चिड़कल बेटा जाया है।

बामन ने इधर-उधर देखा, पर कुछ भी दिखाई नहीं पड़ा। जाना कि यों ही कोई भनक सुन पड़ी होगी। वापस भारा बांधने लगा तो चिड़िया ने फिर कहा :

बांमणिया कण मांगणिया, पग पूळी बांधणिया,
मूसादे नं जा'यर कैजै, चिड़कल बेटा जाया है।

इस बार बामन डरा। सोचा कोई भूत-पलीतों की लीला तो नहीं है।? डर के मारे सरपट भागा। घर आकर ही श्वास लिया। आंगन में पैर रखते ही अपनी घरवरली को हांफते सारी बात बताई। कहने

लगा- अपने खते में भूत पलीतों की शुरूआत हो गई। आज बड़े अचरज की बात हुई। आंखो से दिखाई तो कुछ भी नहीं पड़ा।, किन्तु कानों से दो बार साफ सुनाई दिया।

बांमणिया कण मांगणिया, पग पूळी बांधणिया,
मूसादै नं जा'यर कैजै, चिड़कल बेटा जाया है।

चाकी के नीचे बिल में बैठी चुहिया सारी बात सुन रही थी। उसे इतना धैर्य कहां? उसी क्षण चाकी साफ करने वाले कपड़े की ओढ़नी ओढ़ बाहर आई। बोली :

कद जाया जी कद जाया
वारी जाऊं कद जाया
चिड़कल बेटा कद जाया

कुड़तौ सिंवाड़ू कद जाया
टोपी सिंवाड़ू कद जाया

चुहिया की आखों के सामने कपड़े का घूंघट था, इसलिए दिखाई पड़ने का तो सवाल ही नहीं था। पास ही एक बिल्ली ताक में खड़ी थी। एकदम झपटी और चुहिया को मुंह में पकड़ लिया। चुहिया चीं चीं करती बहुत ही चिल्लाई, पर वहां चिड़िया बहिन के बिना कौन बचाये? देखते देखते बिल्ली उसे मार कर निगल गई। बामन और उसकी घरवाली दोनों अचरज भरी निगाहों से यह तमाशा देखते रहे। उनकी कुछ भी समझ में नहीं पड़ा कि क्या माजरा हो गया?

आपके जवाब के इन्तज़ार में–
शिवसिंहनयाल
'अलारिप्पु' बी-6/62 पहली मंज़िल सफदरजंग इन्कलेव,
नई दिल्ली–29, दूरभाष : ६१०६३२७

ज्योति लेजर टाइप सेटिंग
दिल्ली–110092